ॐ

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-हिन्दी

दिनांक-25/05/2020 क्षितिज-काव्य खंड

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

शुभ प्रभात बच्चों,

आपका दिन मंगलमय हो,चहुँ ओर खुशियाँ ही खुशियाँ हो!

कल की कक्षा में मैंने आपको सवैये के प्रश्न-अभ्यास बनाने दिया था।पूर्ण विश्वास है कि आपने अपने अति आवश्यक कार्य को सर्वोपरि समझते हुए सर्वप्रथम निपटाया होगा! बच्चों, आज मैं उन प्रश्नों को दे रही हूं जो कल -प्रश्न अभ्यास में नहीं दिया था, यह सोच कर कि इसे मैं हल करके आपके समक्ष प्रस्तुत करूंगी, तो आप को समझने में ज्यादा सुविधा होगी। पठन-पाठन से
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

पूर्व एक अति आवश्यक बात, जो हमें सफलता के बहुत करीब ले जाने का कार्य करती है,उसे जान लेते हैं । बच्चों ,प्रज्ञापुराण -04 पृष्ठ संख्या- 300 में वर्णित है। सूखी चट्टान पर लगातार पानी बरसने पर भी एक तिनका नहीं उगता। अंधे को मनोरम दृश्य कभी नहीं दीखते । बहरा मधुर संगीत तक नहीं सुन पाता, पागल के लिए सारा संसार पागल है। दरवाजे बंद हो तो कमरे में न रोशनी पहुंच सकती है न धूप औंधे मुंह पड़े हुए घड़े में पूरी बरसात निकल जाने पर भी एक बूंद पानी नहीं घुसता; जबकि उन दिनों सभी जलाशय अपनी गहराई के अनुरूप जल- संपदा जमा कर लेते हैं। इसी तरह अवतार चेतना प्रवाहित सब जगह होती है, जिनके अंदर जागृति होती है वे उसे पहचान लेते हैं, उसके लिए आगे आते हैं और लाभ उठाते हैं ।इस तथ्य से हमें तो यह पता चल ही गया है कि जब भी ईश्वर आपके समक्ष जैसा भी मौका रखे उस मौके का फायदा उठाना चाहिए ।और बेहतर ....और बेहतर..... के चक्कर में वर्तमान की

अच्छाई को छोड़ना नहीं चाहिए। अतः जो आपको लाभ दिया जा रहा है उससे लाभान्वित होते हुए आप कदम— दर- कदम आगे बढें । इसी उम्मीद के साथ मैं आज का प्रश्न अभ्यास शुरू कर रही हूँ ।

8. भाव स्पष्ट कीजिए

(क) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

उत्तर- उपरोक्त पंक्तियों का भाव यह है कि कवि ब्रज के कांटेदार झाड़ियों व कुंज पर करोड़ों महलों के सुखों को भी न्योछावर करने के लिए तैयार हैं। कहने का तात्पर्य है कि जो आत्मिक सुख ब्रज की प्राकृतिक छटा में है ,वैसा सुख संसार की किसी भी सांसारिक वस्तुओं में नहीं है।

(ख) माइ री वा सुख की मुस्कानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर - उपर्युक्त पंक्तियों का भाव यह है कि कृष्ण की मुस्कान इतनी मोहक है कि गोपियों से वह झेली नहीं जा रही है। अर्थात कृष्ण की मुस्कान पर वह इस तरह आकर्षित हो गई हैं,मोहित हो गई हैं कि लोक-लज्जा भी उनको सताती नहीं है। अर्थात लोक -लज्जा का भय भी उनको नहीं है और वह कृष्ण की तरफ खींची चली जाती हैं।

9.काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए---

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी ।

भाव सौंदर्य -:उपर्युक्त पंक्तियों में गोपियां अपनी सखी के कहने पर कृष्ण के समान वस्त्र, आभूषण तो धारण कर लेंगी परंतु कृष्ण की मुरली को अपने होठों से नहीं लगाना चाहती हैं क्योंकि वह श्री कृष्ण की मुरली को अपना सौत समझती हैं ।उनका मानना है कि कृष्ण हमेशा अपनी मुरली को अपने पास रखते हैं, उसे अपने होठों से हमेशा लगाए रहते हैं ।

शिल्प सौंदर्य-: प्रस्तुत काव्य में ब्रज भाषा तथा सवैया के वर्णिक छंद का सुंदर प्रयोग हुआ है। 'म'तथा 'ल'वर्ण की आवृत्ति होने के कारण यहां पर अनुप्रास अलंकार है।

सवैया के इस पद में यमक अलंकार का सौंदर्य है। 'मुरली', 'मुरलीधर' में सभंग यमक है एवं 'अधरन' धरी 'अधरा न' में भी सभंग यमक अलंकार का सौंदर्य है।

मुरली- बाँसुरी

मुरलीधर- श्रीकृष्ण

अधरन - होठों पर

अधरा न- होठों पर नहीं

आज के लिए इतना ही।

धन्यवाद

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर देश हित के लिए कार्य करें

कुमारी पिंकी "कुसुम"